Research Article | Hindi Sahitya | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 9 | September 2025

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह–भावनाः एक समग्र अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, (हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय, भिवानी, हरियाणा

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के काव्य में अभिव्यक्त विरह–भावना का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य के छायावादी युग की प्रमुख स्तंभ हैं, जिनके काव्य का मूल स्वर विरह–वेदना रहा है। इस शोध पत्र में महादेवी के काव्य में विरह के विविध आयामों–सात्विक विरह, आध्यात्मिक विरह, वैयक्तिक से वैश्विक विरह, करुणा और वेदना तथा रहस्यवादी विरह का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महादेवी की विरह–भावना मात्र व्यक्तिगत न होकर सार्वभौमिक अनुभूति है, जिसमें आत्मा और परमात्मा के अलौकिक वियोग की वेदना के साथ–साथ मिलन की आशा भी समाहित है।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के छायावादी युग में महादेवी वर्मा का नाम अग्रणी है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साथ महादेवी वर्मा को छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में गिना जाता है। महादेवी के काव्य का प्राणतत्व उनकी वेदना और पीड़ा रही है। वे भारतीय काव्य–परंपरा में विरह की कवयित्री के रूप में विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनके काव्य में विरह–भावना केवल दैहिक अथवा शारीरिक न होकर आध्यात्मिक, अलौकिक और सात्विक स्तर पर प्रकट हुई है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य महादेवी वर्मा के काव्य में अभिव्यक्त विरह–भावना के विविध आयामों का समग्र अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में महादेवी के काव्य संग्रहों से प्रासंगिक पंक्तियों का उद्धरण देते हुए उनकी विरह–भावना के स्वरूप, उसके विभिन्न पक्षों और उसके सौंदर्यात्मक मूल्य का विश्लेषण किया गया है।

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय

महादेवी वर्मा (1907–1987) हिंदी साहित्य की प्रमुख कवयित्री हैं, जिन्होंने छायावादी युग को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया। उनके प्रमुख काव्य संग्रह 'नीहार' (1930), 'रश्मि' (1932), 'नीरजा' (1934) और 'सांध्यगीत' (1936) हैं, जिन्हें बाद में 'यामा' (1936) नाम से एक संकलन में प्रकाशित किया गया। उनकी गद्य रचनाओं में 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' आदि प्रमुख हैं।

महादेवी वर्मा के काव्य में भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कविताएँ छायावादी काव्य की विशेषताओं– प्रकृति–चित्रण, मानवीकरण, रहस्यवाद, सौंदर्य–प्रेम, वेदना और अभिव्यंजना की नवीनता से पूर्ण हैं। महादेवी को उनके विशिष्ट साहित्यिक योगदान के लिए 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

विरह–भावना का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

विरह भारतीय साहित्य की एक प्रमुख भावना रही है। संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक विरह को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया गया है। भारतीय काव्यशास्त्र में विरह को श्रृंगार रस के विप्रलंभ श्रृंगार के रूप में देखा गया है। विरह की अनुभूति में प्रेमी और प्रेमिका के बीच भौतिक दूरी होती है, लेकिन मानसिक रूप से वे एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं। भक्ति काल में विरह भावना ने आध्यात्मिक रूप ग्रहण किया, जहाँ आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी को विरह के रूप में प्रस्तुत किया गया। सूफी काव्य परंपरा में भी विरह–भावना का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। रीतिकाल में विरह को अधिक श्रृंगारिक और लौकिक रूप में अभिव्यक्त किया गया।

छायावादी युग में विरह–भावना ने एक नया आयाम प्राप्त किया। इस युग के कवियों ने विरह को आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें अलौकिक, आध्यात्मिक और रहस्यवादी तत्व समाहित थे। महादेवी वर्मा की विरह–भावना इसी छायावादी परंपरा का हिस्सा है, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति में एक विशिष्ट वैयक्तिकता और गहनता है।

महादेवी वर्मा छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक महत्वपूर्ण नाम हैं। उन्होंने हिंदी काव्य को ऐसी भाव–सम्पन्नता दी जिसमें आत्मा की गहराइयों से निकली करुण स्वर लहरियाँ पाठकों के हृदय को भिगो देती हैं। महादेवी वर्मा का काव्य "वेदना का दस्तावेज़" कहा गया है, क्योंकि उनकी रचनाओं में आनंद की अपेक्षा पीड़ा का स्वर अधिक मुखरित है। इस पीड़ा का केंद्र 'विरह' है। यह विरह सांसारिक–प्रेम का सामान्य वियोग नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा, सीमित और असीम सत्ता का विलगाव है। **"वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वह रहना चाहती हैं। उसके मिलन–सुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं।"**[1] उनकी रचनाओं की करुणा, दर्द और विरह कहीं संयोग की आकुलता बनकर आती है तो कहीं आत्मा के भीतर से उठती शांति बनकर। उनके गीतों को पढ़ते

हुए ऐसा लगता है मानो यह केवल कवयित्री की आत्मा का करुण स्वर न होकर पूरे मानव–समाज की पीड़ा का गीत हो।

महादेवी के काव्य में विरह–भावना का स्वरूप

1. सात्विक विरहः महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। उनकी विरह–भावना में शारीरिक या इंद्रियजन्य आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धता और पवित्रता है। वे स्वयं को 'वेदना की रानी' कहती हैं–

"अपने इस सूने पन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर
करती रहती दीवाली"2

महादेवी की विरह वेदना व्यक्तिगत होते हुए भी उच्च और सात्विक स्तर की है। उनके विरह में कहीं भी शारीरिक मिलन की आकांक्षा नहीं है, बल्कि आत्मिक मिलन की अभिलाषा है। यह सात्विकता उनकी विरह–वेदना को विश्व–वेदना के रूप में परिवर्तित कर देती है।

2. आध्यात्मिक विरहः महादेवी के काव्य में विरह का स्वरूप आध्यात्मिक है, जो आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी से उत्पन्न होता है। उनकी करुणा के मूल में ब्रह्म से वियोग का भाव ध्वनित होता है। इसी प्रिय 'ब्रह्म' की खोज में महादेवी अंतर्मुखी हो गई हैं। उनके काव्य का मूल द्रव करुणा–सिक्त हो उठा है।

महादेवी की आध्यात्मिक विरह–भावना में भारतीय दर्शन और वेदांत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वे आत्मा और परमात्मा के अलौकिक संबंध को विरह के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। यह विरह उन्हें परम सत्ता की ओर ले जाता है और उनके काव्य को गहराई प्रदान करता है।

3. वैयक्तिक से वैश्विक विरहः महादेवी की विरह–भावना वैयक्तिक स्तर से प्रारंभ होकर वैश्विक स्तर तक विस्तृत होती है। उनकी व्यक्तिगत पीड़ा विश्व–वेदना का रूप धारण कर लेती है। वे स्वयं लिखती हैं– **"दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सकें, किन्तु हमारा एक बूँद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।"**3

यह उद्धरण महादेवी की विरह–वेदना के वैश्विक स्वरूप को स्पष्ट करता है। उनके लिए दुःख या विरह एक ऐसा तत्व है जो पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है। इस प्रकार, उनकी वैयक्तिक वेदना मानवता की वेदना बन जाती है।

4. करुणा और वेदनाः महादेवी के काव्य में विरह–भावना करुणा और वेदना से भरपूर है। वे स्वयं को "मैं नीर भरी दुख की बदली" के रूप में देखती हैं। उनके काव्य में जो विरह दिखाई देता है, वह अपने प्रियतम से मिलने की आतुरता के कारण है। उनकी वेदना हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई हैः

"नैनों में आँसू है,
और हृदय में सिहरन है,
पुलक–पुलक उर सिहर–सिहर तन,
आज नयन आते क्यों भर–भर।"4

इन पंक्तियों में वेदना के साथ–साथ मिलन की आशा और प्रतीक्षा का भाव भी व्यक्त हुआ है। महादेवी की विरह–वेदना में निराशा के साथ–साथ आशा का अंश भी है।

5. रहस्यवादी विरहः महादेवी वर्मा की कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम और विरह की भावना इतनी गहन व आलौकिक है कि वह रहस्यवाद की सीमा तक पहुँचती जाती है। जब कोई कवि किसी संसारी व्यक्ति की अपेक्षा किसी अव्यक्त, अगोचर एवं असीम सत्ता के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है तो उसे रहस्यानुभूति अथवा रहस्यवाद कहा जाता है। महादेवी के काव्य में रहस्यवादी विरह का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है। उनके प्रिय की पहचान अस्पष्ट है, जो रहस्यवाद का प्रमुख लक्षण है। वे अपने प्रिय से कभी प्रत्यक्ष रूप से नहीं मिलती, केवल उसके अस्तित्व को अनुभव करती हैं।

महादेवी के काव्य में विरह के विविध आयाम

1. 'नीहार' में विरह–भावनाः 'नीहार' महादेवी के किशोर जीवन की वह रचना है, जिसमें उनका मन प्रणय और पीड़ा के वशीभूत हो रहा था। कवयित्री का मन एक ऐसा अनोखा संसार बसाना चाहता है जहाँ वेदना की मधुर धारा बह रही हो–

"चाहता है यह पागल प्यार।
अनोखा एक नया संसार।।
कलियों के उच्छवास शून्य में ताने एक वितान
तुहिन कणों पर मृदु कम्पन से सेज बिछादे गान।"5

'नीहार' में विरह की अनुभूति कोमल और नाजुक है। कवयित्री के प्रथम काव्य–संग्रह होने के कारण इसमें विरह–भावना अभी पूर्ण परिपक्वता प्राप्त नहीं कर पाई है, लेकिन इसमें आगामी काव्य–संग्रहों में विकसित होने वाली विरह–वेदना के बीज दिखाई देते हैं।

इस संग्रह के एक गीत में विरहजन्य व्याकुलता के साथ संयोग की इच्छा भी छिपी हुई हैः

"जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार

अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार।"6

इन पंक्तियों में प्रिय के आगमन की कल्पना से कवयित्री के हृदय में उत्पन्न होने वाले भावों का सुंदर चित्रण हुआ है। प्रिय के आने से जीवन में बसंत छा जाएगा और विरह का संचित भाव लुट जाएगा।

2. अन्य काव्य संग्रहों में विरह–भावनाः महादेवी के अन्य काव्य संग्रहों 'रश्मि', 'नीरजा' और 'सांध्यगीत' में भी विरह–भावना के विविध रूप दिखाई देते हैं। 'रश्मि' में विरह का आध्यात्मिक पक्ष अधिक स्पष्ट होता है, जहां कवयित्री आत्मा और परमात्मा के मिलन की आकांक्षा व्यक्त करती है।

'नीरजा' में विरह–वेदना अधिक परिपक्व और गहन हो जाती है। इसमें कवयित्री विरह की अनुभूति को अधिक सूक्ष्म और संवेदनशील रूप में व्यक्त करती है। 'सांध्यगीत' में विरह का विश्व–वेदना के रूप में विस्तार होता है, जहाँ व्यक्तिगत पीड़ा सार्वभौमिक पीड़ा का रूप धारण कर लेती है। **"महादेवी के गीतों में क्रन्दन और रुदन का रूप देखा जाता है, उनके पीछे भी समाज का बन्धन छिपा हुआ है। जीवन के सुख एवं स्वप्नों के टूट जाने के कारण दुःख एव। रुदन के प्रथ्त इतना लगाव देखा जाता है।"7**

विरह–भावना का सौंदर्यात्मक पक्ष

महादेवी के काव्य में विरह–भावना का सौंदर्यात्मक पक्ष अत्यंत समृद्ध है। वे विरह को पीड़ा के रूप में नहीं, बल्कि सौंदर्य के रूप में देखती हैं। उनके लिए विरह एक ऐसा अनुभव है जो आत्मा को परिष्कृत और उदात्त बनाता है।

महादेवी के काव्य में विरह–भावना की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त बिंब, प्रतीक और अलंकार उनके काव्य को सौंदर्यात्मक गरिमा प्रदान करते हैं। प्रकृति के विभिन्न तत्व– चांदनी, बादल, वर्षा, फूल, पत्ते, बयार आदि विरह–भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम बनते हैं। "अपने एकांत निजी क्षणों को कविता का विषय बनाने के कारण महादेवी में प्रयत्न–साधित सूक्ष्मता और प्रतीकात्मकता मिलती है। उनका संयम तथा संकोच एक दार्शनिक आवरण का रूप ले लेता है।"8

महादेवी के काव्य में विरह का सौंदर्य इस बात में भी है कि वे विरह में भी मिलन की आशा देखती हैं। उनके लिए विरह और मिलन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विरह उन्हें मिलन की ओर ले जाता है और मिलन की आशा विरह को सहनीय बनाती है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह–भावना का समग्र अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि उनकी विरह–भावना केवल शारीरिक या लौकिक न होकर सात्विक, आध्यात्मिक और अलौकिक है। उनके काव्य में जो विरह–वेदना है, वह उनकी अश्रुधारा बनकर सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करती है। महादेवी ने जिन भावों को केंद्र बनाकर कविता का सृजन किया है, वे मूलभूत भाव वेदना, प्रेम, रहस्य और दर्शन है। कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख–दुःख, हास–रूदन, हर्ष–शोक तथा आनंद और करुणा की अभिव्यक्ति की है। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महादेवी की कविता का नेपथ्य : विजय बहादुर सिंह, किताबघर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ–48
2. नीहार : महादेवी वर्मा, 'मेरा राज्य' कविता से उद्धृत।
3. 'यामा' की भूमिका : महादेवी वर्मा, पृष्ठ–3
4. नीरजा : महादेवी वर्मा, 'पुलक पुलक उर, सिहर सिहर तन' कविता से उद्धृत।
5. सांध्यगीत : महादेवी वर्मा, पृष्ठ–239
6. नीहार : महादेवी वर्मा, 'जो तुम आ जाते एक बार' कविता से उद्धृत।
7. महादेवी वर्मा की काव्य अनुभूति : डॉ. रेणु दीक्षित, पृष्ठ–66
8. महादेवी : संपादक–डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1976, पृष्ठ–6